RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • DEC 2017 • PAGES 8 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

Faculty Entrepreneurship Development Program

Two weeks FDP starts from 26/12/2017 to 08/01/2018

Tecnia Institute of Advanced Studies, New Delhi is going to organize two weeks Faculty Entrepreneurship Development Program in collaboration with National Foundation of Indian Engineers, New Delhi from 26/12/2017 to 08/01/2018 at Tecnia Auditorium, TIAS. The program has been sponsored by Ministry of Science and Technology, Department of Science and Technology, Government of India and National Science & Technology Entrepreneurship Development Board (NSTEDB), New Delhi. Through this training program, faculty members will be trained in Entrepreneurial Skills so that they can act as resource persons in guiding and motivating young professionals to be the entrepreneurs of tomorrow.

Dr. Ajay Kumar, Director, Tecnia Institute of Advanced Studies, New Delhi told that the faculty Development Program (FDP) will provide inputs on the process and practices of Entrepreneurship Development, Communication and Inter-personal Skills, Creativity, Problem Solving, Achievement, Motivation, Training and inputs on resource and knowledge industries. The training methodology includes Case Studies, Group Discussion, Games and Simulation Exercises, Industrial Visits and Classroom Lectures. Dr A K Srivastava, CEO (A & D), TIAS said that the FDP aims at equipping teachers with skills and knowledge that are essential for inculcating entrepreneurial values in students and guiding their interests towards entrepreneurial career.

- Bal Krishan Mishra

Glimpses of FDP

SWOT ANALYS

OPMENT ENTREPRENEURSHIP PROGRAM (FDP)

CULTY DEVELOPMENT ENTREPRENEURSHIP PROGRAM (FDP)

FACULTY DEVELOPMENT ENTREPRENEURSHIP PROGRAM

FACULTY DEVELOPMENT ENTREPRENEURSHIP PROGRAM (FDP)

FACULTY DEVELOPMENT ENTREPRENEURSHIP PROGRAM (FDP)
Organized By
NATIONAL FOUNDATION OF INDIAN ENGINEERS (NAFEN)
Jointly With
TECNIA INSTITUTE OF ADVANCED STUDIES (TIAS)
Dr. A.K. Srivastava
Dr. R.E. Gupta

विश्व एड्स दिवस

विश्व एड्स दिवस पूरी दुनिया में हर साल 1 दिसम्बर को लोगों को एड्स (एक्वायर्ड इम्युनो डेफिशियेंसी सिंड्रोम) के बारे में जागरुक करने के लिये मनाया जाता है। एड्स ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेंसी (एचआईवी) वायरस के संक्रमण के कारण होने वाला महामारी का रोग है। यह दिन सरकारी संगठनों, गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाज और अन्य स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा एड्स से संबंधित भाषण या सार्वजनिक बैठकों में चर्चा का आयोजन करके मनाया जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने साल 1995 में विश्व एड्स दिवस के लिए एक आधिकारिक घोषणा की जिसका अनुकरण दुनिया भर में अन्य देशों द्वारा किया गया। एक मोटे अनुमान के मुताबिक, 1981–2007 में करीब 25 लाख लोगों की मृत्यु एचआईवी संक्रमण की वजह से हुई। यहां तक कि कई स्थानों पर एंटीरेट्रोवायरल उपचार का उपयोग करने के बाद भी, 2007 में लगभग 2 लाख लोग (कुल का कम से कम 270,000 बच्चे) इस महामारी रोग से संक्रमित थे।

विश्व एड्स दिवस समारोह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य दिन समारोह बन गया है। विश्व एड्स दिवस स्वास्थ्य संगठनों के लिए लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाने, इलाज के लिये संभव पहुँच के साथ–साथ रोकथाम के उपायों पर चर्चा करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है ।विश्व एड्स दिवस का इतिहास

विश्व एड्स दिवस की पहली बार कल्पना 1987 में अगस्त के महीने में थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न द्वारा की गई थी। थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न दोनों डब्ल्यू.एच.ओ.(विश्व स्वास्थ्य संगठन) जिनेवा, स्विट्जरलैंड के एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के लिए सार्वजनिक सूचना अधिकारी थे। उन्होंने एड्स दिवस का अपना विचार डॉ. जॉननाथन मन्न (एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के निदेशक) के साथ साझा किया, जिन्होंने इस विचार को स्वीति दे दी और वर्ष 1988 में 1 दिसंबर को विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाना शुरु कर दिया। उनके द्वारा हर साल 1 दिसम्बर को सही रुप में विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने इसे चुनाव के समय, क्रिसमस की छुट्टियों या अन्य अवकाश से दूर मनाने का निर्णय लिया। ये उस समय के दौरान मनाया जाना चाहिए जब लोग, समाचार और मीडिया प्रसारण में अधिक रुचि और ध्यान दें सकें।

एचआईवीध्एड्स पर संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम, जो यूएन एड्स के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष 1996 में प्रभाव में आया और दुनिया भर में इसे

बढ़ावा देना शुरू कर दिया गया। एक दिन मनाये जाने के बजाय, पूरे वर्ष बेहतर संचार, बीमारी की रोकथाम और रोग के प्रति जागरूकता के लिये विश्व एड्स अभियान ने एड्स कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए वर्ष 1997 में यूएन एड्स शुरु किया।

शुरु के सालों में, विश्व एड्स दिवस के विषयों का ध्यान बच्चों के साथ साथ युवाओं पर केन्द्रित था, जो बाद में एक परिवार के रोग के रूप में पहचाना गया, जिसमें किसी भी आयु वर्ग का कोई भी व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो सकता है। 2007 के बाद से विश्व एड्स दिवस को व्हाइट हाउस द्वारा एड्स रिबन का एक प्रतिष्ठित प्रतीक देकर शुरू किया गया था।

विश्व एड्स दिवस पर क्रियाएँ

लोगों में जागरुकता बढ़ाने और उस विशेष वर्ष के विषय के सन्देश को प्रसारित करने के लिये विश्व एड्स दिवस पर विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ की जाती हैं। लोगों के बीच में जागरुकता बढ़ाना ही कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य है। कुछ गतिविधियाँ नीचे दी गयी हैरू

- समुदाय आधारित व्यक्तियों और संगठनों को योजनाबद्ध बैठक के आयोजन के लिये विश्व एड्स दिवस गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिये। ये अच्छी तरह से स्थानीय क्लीनिकों, अस्पतालों, सामाजिक सेवा एजेंसियों, स्कूलों, एड्स वकालत समूहों आदि से शुरू किया जा सकता है।
- बेहतर जागरूकता के लिए वक्ताओं और प्रदर्शकों द्वारा एकल कार्यक्रम या स्वतंत्र कार्यक्रमों का एक अनुक्रम मंचों, रैलियों, स्वास्थ्य मेलों, समुदायिक कार्यक्रमों, विश्वास सेवाओं, परेड, ब्लॉक दलों और आदि के माध्यम से निर्धारित किये जा सकते हैं।
- विश्व एड्स दिवस से मान्यता प्राप्त एजेंसी बोर्ड द्वारा एक सार्वजनिक बयान को प्रस्तुत किया जा सकता है।
- स्कूलों, कार्य स्थलों या सामुदायिक समूहों के लिये लाल रिबन आशा के चिह्न के रुप में पहनना और बाँटना चाहिये। सामाजिक मीडिया के आउटलेट के लिए इलेक्ट्रॉनिक रिबन भी वितरित किया जा सकता है।

सभी गतिविधियों (जैसे डीवीडी प्रदर्शनियाँ और एड्स की रोकथाम पर सेमिनार) व्यवसायों, स्कूलों, स्वास्थ्य देखभाल संगठनों, पादरी और स्थानीय एजेंसियों को उनके महान काम के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

- किसी सार्वजनिक पार्क में एक कैण्डललाईट परेड आयोजित की जा सकती है या निकटतम एजेंसी में आयोजित गायकों, संगीतकारों, नर्तकों, कवियों, कहानी वक्ताओं और आदि मनोरंजक प्रदर्शन के माध्यम से एड्स की रोकथाम का संदेश वितरित कर सकता है।
- विश्व एड्स दिवस के बारे में जानकारी अपनी एजेंसी की वेब साइट को जोड़ने के द्वारा वितरित की जा सकती है।
- सभी की योजनाबद्ध कार्यक्रमों और गतिविधियों को पहले से ही ई–मेल, समाचार पत्र, डाक से या इलेक्ट्रॉनिक बुलेटिन के माध्यम से वितरित किया जाना चाहिए।
- लोगों को एचआईवी ध एड्स के लिए प्रदर्शनियों, पोस्टर, वीडियो आदि प्रदर्शित करके जागरूक किया जा सकता है।
- विश्व एड्स दिवस की गतिविधियों के बारे में ब्लॉग, फेसबुक, ट्विटर के माध्यम से या अन्य सामाजिक मीडिया वेबसाइटों के माध्यम से लोगों के एक बड़े समूह को सूचित किया जा सकता है।
- विश्व एड्स दिवस मनाने के लिये अन्य समूह सक्रिय रूप से योगदान कर सकते हैं।
- एक मोमबत्ती की रोशनी के समारोह को एचआईवी/एड्स के कारण जिन व्यक्तियों का निधन हो गया हो की स्मृति में आयोजित किया जा सकता है।
- धार्मिक नेताओं को एड्स की असहिष्णुता के बारे में कुछ बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- एचआईवी/एड्स से पीड़ित लोगों को साहचर्य प्रदान करने के लिए भोजन, आवास, परिवहन सेवा शुरू की जा सकती है। उन में नैतिकता को बढ़ाने के लिये सामाजिक कार्य, पूजा या अन्य कार्यों में आमंत्रित किया जा सकता है।

–पलक
बीजेएमसी

BOOK EXHIBITION ON LIBRARIAN DAY

Tecnia Institute of Advanced Studies, Delhi organized One Day Book Exhibition on the occasion of Dr SR Ranganathan's 125th Birth anniversary (Father of Library Science, India) in Multipurpose Hall.

Anil Kumar Jharotia, Librarian has invited all publishers. "New Age International Publisher, Viva Books, Pearson, Manakin Press and Atharv Enterprises" have participated in this book exhibition. They have displayed latest edition and Titles books. Many Faculty members, staff and students have visited in this event and suggested books for procurement.

- Anil K Jharotia

Everyday is Human Rights Day

Every so often a thing comes to pass that is of such astounding importance that we must stand up and recognize it. We must place this thing on the pedestal it deserves, and ensure that the precepts and policies put in place by it are adhered to, appreciated, and spread as far as the human voice will carry. Such is the sort of message sent by Human Rights Day.

History of Human Rights Day

Human Rights Day was established in 1948, and ever since that auspicious day it has stood as the first major stride forward in ensuring that the rights of every human across the globe are protected. From the most basic human needs such as food, shelter, and water, all the way up to access to free and uncensored information, such has been the goals and ambitions laid out that day.

The Universal Declaration of Human Rights (UDHR) was a shout across the world by the leading countries in the world, stating loud and clear that no matter where we live, what we believe, or how we love, we are each individually deserving of the most basic fundaments of human needs. Every year Human Rights Day marks conferences around the world dedicated to ensuring that these ideals are pursued, and that the basic Human Rights of every person is made a priority in the global theater.

How to Celebrate Human Rights Day

The first and foremost way to celebrate Human Rights Day is to take some time to appreciate the effect that this resolution has had on your world and life. Look around your neighborhood and see the effects on a local scale, the charitable works being done to promote the health and well-being of those who are less fortunate.

The next step is to get out there and make a difference, whether it's simply making a donation to one of the dozens of organizations that work towards this global purpose, or organizing a donation drive of your own to help out those organizations fighting the good fight.

Don't think that your gestures have to be grand, simply gathering enough to put together a bunch of care packages of simple needs and necessities and handing them out amongst your local homeless can go a long way to helping to support this cause. The need is large, but is made of limitless minor actions that can lead to a world-wide change in quality of life.

Neelakshi Chawla, BA(JMC)

इस संन्यासी ने अकेले ही खोद डाला विशाल तालाब

सालों से सूखा झेल रहे बुंदेलखंड में बाबा ष्णानंद जैसे जीवट लोगों की भी कमी नहीं जो अकेले प्रति की विभीषिका से लड़ने का साहस रखते हैं. उन्होंने आठ बीघे खेत में 18 फुट गहराई तक खोदकर उसे विशाल तालाब का आकार दे दिया.

बुंदेलखंड इलाके में सूखे के चलते खासतौर पर गर्मी के मौसम पानी को लेकर त्राहि–त्राहि मची रहती है. बुंदेलखंड के बाबा ष्णानंद ने करीब आठ बीघे खेत में 18 फुट गहराई तक खोदकर उसे विशाल तालाब का आकार दे दिया और आज यही तालाब आस–पास के लोगों की और तमाम पशुओं की भी प्यास बुझा रहा है.

हमीरपुर जिले के पचखुरा गांव में संत बाबा ष्णानंद ने दो साल की कड़ी मेहनत से इस असंभव से काम को कर दिखाया. साठ साल के ष्णानंद ने 12 वीं कक्षा तक पढ़ाई की है और 18 साल की उम्र में ही वे संन्यासी बन गए थे.

बाबा ष्णानंद कहते हैं कि पहले उन्हें लगा कि गांव के लोग खुद तालाब बना लेंगे या फिर सूखे पड़े तालाबों की मरम्मत करा लेंगे लेकिन जब ऐसा नहीं हुआ तो उन्होंने अकेले ही ये काम करने का बीड़ा उठाया. वो बताते हैं, श्शगांव वाले पानी की समस्या से लगातार जूझ रहे थे लेकिन खुद कुछ करना नहीं चाह रहे थे. मुझे लगा कि ये लोग कुछ नहीं करेंगे और इसके लिए मुझे ही आगे आना पड़ेगा तो मैंने अकेले ही तालाब की खुदाई शुरू कर दी.

ष्णानंद बताते हैं कि जब उन्होंने तालाब की खुदाई शुरू की तो गांव वालों ने 'पागलश समझकर मजाक उड़ाया. बकौल ष्णानंद, बावजूद इसके वो अपने काम में डटे रहे और आज गांव वालों के लिए न सिर्फ उन्होंने पानी की व्यवस्था कर दी है बल्कि एक मिसाल भी कायम की है.

वो कहते हैं, दो साल तक लगातार काम करता रहा. सुबह छह बजे से लेकर शाम तक लगातार काम किया. पहले फावड़े से खोदकर मिट्टी निकालता था, फिर मिट्टी को हटाता था. उसी मिट्टी से तालाब के चारों ओर बाउंड्री भी बना दी है.ष्णानंद यहीं रुके हैं बल्कि उनका कहना है कि आगे भी वो तमाम सूख चुके तालाबों का नया जीवन देने का प्रयास करेंगे. बुंदेलखंड इलाके में सूखे की समस्या से न सिर्फ इंसान बल्कि जानवर भी परेशान रहते हैं. गर्मियों के मौसम में पानी की किल्लत यहां इस कदर होती है कि लोगों को कई किलोमीटर दूर से नदियों या नहरों से पानी लाना पड़ता है क्योंकि नल, तालाब, कुंए और हैंडपंप सूख जाते हैं.

इस इलाके में ये समस्या कोई नहीं है बल्कि यहां की भौगोलिक स्थिति के चलते प्राचीन काल से ही रही है. इसी को ध्यान में रखते हुए यहां के शासकों ने, खासकर चंदेल राजाओं ने बड़े–बड़े तालाब खुदवाए थे. इसके अलावा भी इस इलाके में जगह–जगह छोटे–बड़े तालाब मिलते हैं लेकिन कालांतर में रख–रखाव के अभाव में ये तालाब या तो सूख गए या फिर अतिक्रमण के शिकार हो गए. लेकिन अब जब ये इलाका लगातार सूखे की समस्या को झेल रहा है तो लोग इन पुराने प्रयासों की ओर लौटने लगे हैं.

हालांकि इस इलाके में सूखे की विकट समस्या को देखते हुए ही सरकार ने खेत–तालाब योजना भी शुरू की है. इसके तहत मनरेगा मजदूरों से तालाब की खुदाई कराई जाती है. दो घन फुट गहरी खुदाई के लिए मजदूरों को करीब 250 रुपये का भुगतान किया जाता है लेकिन बाबा ष्णानंद ने इस काम के लिए न तो किसी से आर्थिक मदद ली और न ही किसी ने उन्हें मदद देने की पेशकश की. हां, ये जरूर है कि तालाब बन जाने के बाद तारीफ करने वालों की कमी नहीं है.

मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के तेरह जिलों में बंटा बुंदेलखंड का ये इलाका सूखे से इस कदर प्रभावित रहता है कि अब तक लाखों लोग यहां से पलायन कर गये और हजारों की संख्या में यहां के किसान आत्म हत्या कर चुके हैं. हालांकि केंद्र सरकार और राज्य सरकारें कभी बुंदेलखंड पैकेज, कभी कर्जमाफी और कभी अन्य योजनाओं के जरिए राहत पहुंचाने की कोशिश करती हैं लेकिन राहत पीड़ित लोगों तक पहुंचने में या तो देर हो चुकी होती है या फिर कई बार वहां तक पहुंच ही नहीं पाती और बीच में ही भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती है.

हमीरपुर में स्थानीय पत्रकार और आरटीआई एक्टिविस्ट पंकज सिंह परिहार कहते हैं कि यहां की जमीन बंजर पड़ी है, जलस्रोत सूख चुके हैं, भूमिगत जलस्तर तेजी से घटा है और सूखे से पीड़ित लोगों का लगातार पलायन जारी है. वो कहते हैं, "पूरे इलाके में गांव के गांव खाली हो गए हैं लेकिन सरकारों की ओर से एक के बाद एक समितियां बनाकर और कभी–कभी कुछ पैकेज जारी करके बुंदेलखंड को बचाने की खोखली और कागजी कार्रवाई की जा रही है. केंद्र सरकार की ओर से भेजे गए बुंदेलखंड पैकेज के हजारों करोड़ रुपये राज्य सरकार ने कहां खर्च कर दिया, खुद उसे ही नहीं पता है और यहां के लोग बदतर हालात में जीने को विवश हैं."

पंकज सिंह परिहार बताते हैं कि सूखे की समस्या भले ही प्रातिक हो लेकिन यहां चल रहे अवैध खनन इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं लेकिन इसे रोकने के लिए कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो रही है. जहां तक पानी के संकट का सवाल है तो मौजूदा खेत तालाब योजना के अलावा भी कई योजनाएं चल रही हैं लेकिन यहां के लोगों का कहना है कि ज्यादातर योजनाएं 'कागजों परश ही चलती हैं, जमीन पर नहीं.

सत्तर के दशक में अपने समय में एशिया की सबसे बड़ी जल परियोजना के नाम से मशहूर 'पाठा पेयजल परियोजनाश भी इस इलाके में शुरू हुई थी जिसमें पाइपलाइन के जरिए पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की गई थी.

इलाके के सामाजिक कार्यकर्ता अभिमन्यु बताते हैं कि परियोजना के पूरा होने पर चित्रकूट के अलावा मानिकपुर के दूरदराज इलाके में बसे आदिवासियों के लिए भी पीने का पानी मिलने लगा लेकिन बाद में बदइंतजामी के चलते इसका जितना लाभ मिलना चाहिए था, वो नहीं मिल सका.

–सुरभि जजोडिया
बीजेएमसी

विश्व स्तर के विधिवेत्ता थे डा. भीमराव अंबेडकर

भारतीय समाज में सामाजिक समता, सामाजिक न्याय, सामाजिक अभिसरण जैसे समाज परिवर्तन के मुददों को उठाने वाले भारतीय संविधान के निर्माता व सामाजिक समरसता के प्रेरक भारतरत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को महू मध्य प्रदेश में हुआ था। इनके पिता रामजी सकपाल व माता भीमाबाई धर्मप्रेमी दम्पति थे। अम्बेडकर का जन्म महार जाति में हुआ था जो उस समय अस्पृश्य मानी जाती थी। इस कारण उन्हें कदम–कदम पर असमानता और अपमान सहना पड़ता था। सामाजिक समता, सामाजिक न्याय, सामाजिक अभिसरण जैसे समाज परिवर्तन के मुददों को प्रधानता दिलाने वाले विचारवान नेता थे डॉ. अंबेडकर, जिस समय उनका जन्म हुआ तथा उनकी शिक्षा दीक्षा का प्रारम्भ हुआ उस समय समाज में इतनी भयंकर असमानता थी कि जिस विद्यालय में वे पढ़ने जाते थे वहां पर अस्पृश्य बच्चों को एकदम अलग बैठाया जाता था तथा उन पर विद्यालयों के अध्यापक भी कतई ध्यान नहीं देते थे न ही उन्हें कोई सहायता दी जाती थी। उनको कक्षा के अंदर बैठने तक की अनुमति नहीं होती थी साथ ही प्यास लगने पर कोई ऊंची जाति का व्यक्ति ऊंचाई से उनके हाथों पर पानी डालता था क्योंकि उस समय मान्यता थी कि ऐसा करने से पानी और पात्र दोनों अपवित्र हो जाते थे। एक बार वे बैलगाड़ी में बैठ गये तो उन्हें धक्का देकर उतार दिया गया। वह संस्कृत पढ़ना चाहते थे लेकिन कोई पढ़ाने को तैयार नहीं हुआ। एक बार वर्षा में वे एक घर की दीवार से लांघकर बौछार से स्वयं को बचाने लगे तो मकान मालिक ने उन्हें कीचड़ में धकेल दिया था। इतनी कठिनाइयों को झेलने के बाद डॉ. अम्बेडकर ने अपनी शिक्षा पूरी की। गरीबी के कारण उनकी अधिकांश पढ़ाई मिटटी के तेल की ढिबरी में हुई। 1907 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास करके बंबई विवि. में प्रवेश लिया जिसके बाद उनके समाज में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। 1923 में वे लंदन से बैरिस्टर की उपाधि लेकर भारत वापस आये और वकालत शुरू की। वे पहले ऐसे अस्पृश्य व्यक्ति बन गये जिन्होंने भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी उच्च शिक्षा ग्रहण करने में सफलता प्राप्त की। उस समय वे भारत के सबसे अधिक पढ़े लिखे तथा विद्वान नेता थे। डॉ. अम्बडेकर संस्कृत भाषा के प्रबल समर्थक थे।

इसी साल वे बंबई विधानसभा के लिए भी निर्वाचित हुए पर छुआछूत की बीमारी ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। 1924 में भीमराव ने निर्धन और निर्बलों के उत्थान हेतु बहिष्कृत हितकारिणी सभा बनायी और संघर्ष का रास्ता अपनाया। 1936 में स्वतंत्र लेबर पार्टी की स्थापना की और 1937 में उनकी पार्टी ने केंद्रीय विधानसभा के चुनावों में 15 सीटें प्राप्त कीं। इसी वर्ष उन्होंने अपनी पुस्तक जाति का विनाश भी प्रकाशित की जो न्यूयार्क में लिखे एक शोध पर आधारित थी। इस

THIS MONTH

December 6, 1877 - At his laboratory in West Orange, New Jersey, Thomas Edison spoke the children's verse "Mary had a Little Lamb..." while demonstrating his newly invented phonograph which utilized a revolving cylinder wrapped in tinfoil to record sounds.

•••

December 31, 1879 - Thomas Edison provided the first public demonstration of his electric incandescent lamp at his laboratory in Menlo Park, New Jersey.

•••

December 23, 1888 - Dutch painter Vincent van Gogh cut off his left ear during a fit of depression.

•••

December 15, 1890 - Sioux leader Sitting Bull (native name Tatanka-yatanka) was killed in a skirmish with U.S. soldiers along the Grand River in South Dakota as his warriors tried to prevent his arrest.

•••

December 29, 1890 - Members of the U.S. 7th Cavalry massacred more than 200 Native American (Sioux) men, women and children at Wounded Knee Creek, South Dakota.

•••

Compilation: Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Above-the-Line Personnel: A budgetary division referring to nontechnical personnel.

•••

Actor: A person (male or female) who appears on-camera in dramatic roles. Actors always portray someone else.

•••

Below-the-Line Personnel: A budgetary division referring to technical personnel.

•••

Blocking: Carefully worked-out movement and actions by the talent and for all mobile television equipment.

•••

Cue Card: A large, hand-lettered card that contains copy, usually held next to the camera lens by floor personnel.

•••

Foundation: A makeup base over which further makeup such as rouge and eye shadow is applied.

•••

Makeup: Cosmetics used to enhance, correct, or change appearance.

•••

News Production Personnel: People assigned exclusively to the production of news, documentaries, and special events.

•••

Compilation: Rahul Mittal

पुस्तक में उन्होंने हिंदू धार्मिक नेताओं और जाति व्यवस्था की जोरदार आलोचना की। उन्होंने अस्पृश्य समुदाय के लोगों को गांधी द्वारा रचित शब्द हरिजन की पुरजोर निंदा की। यह उन्हीं का प्रयास है कि आज यह शब्द पूरी तरह से प्रतिबंधित हो चुका है। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं तथा मूकनायक नामक एक पत्र भी निकाला। 1930 में नासिक के कालाराम मंदिर में प्रवेश को लेकर उन्होंने सत्याग्रह और संघर्ष किया। उन्होंने पूछा कि यदि भगवान सबके हैं तो उनके मंदिर में कुछ ही लोगों को प्रवेश क्यों दिया जाता है। अछूत वर्गों के अधिकारों के लिये उन्होंने कई बार कांग्रेस तथा ब्रिटिश शासन से संघर्ष किया।

1941 से 1945 के बीच उन्होंने अत्यधिक संख्या में विवादास्पद पुस्तकें लिखीं और पर्चे प्रकाशित किये। जिसमें 'थॉट आफ पाकिस्तान' भी शामिल है। डॉ. अम्बेडकर ही थे जिन्होंने मुस्लिम लीग द्वारा की जा रही अलग पाकिस्तान की मांग की कड़ी आलोचना व विरोध किया। उन्होंने मुस्लिम महिला समाज में व्याप्त दमनकारी पर्दा प्रथा की भी निंदा की। स्वतंत्रता प्राप्ति के वे रक्षा सलाहकार समिति और वाइसराय की कार्यकारी परिषद के लिए श्रम मंत्री के रूप में भी कार्यरत रहे।

भीमराव को विधिमंत्री भी बनाया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने संविधान निर्माण में महती भूमिका अदा की। 2 अगस्त 1947 को अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नये संविधान की रचना के लिये बनी संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। संविधान निर्माण के कार्य को कड़ी मेहनत व लगन के साथ उन्होंने पूरा किया और सहयोगियों से सम्मान प्राप्त किया। उन्हीं के प्रयासों के चलते समाज के पिछड़े व कमजोर तबकों के लिये आरक्षण व्यवस्था लागू की गयी लेकिन कुछ शर्तों के साथ। लेकिन आज के तथा कथित राजनैतिक दल इसका लाभ उठाकर अपनी राजनीति को गलत तरीके से चमकाने में लगे हैं। संविधान में छुआछूत को दण्डनीय अपराध घोषित होने के बाद भी उसकी बुराई समाज में बहुत गहराई तक जमी हुई थी जिससे दुखी होकर उन्होंने हिंदू धर्म छोड़ने और बौद्ध धर्म को ग्रहण करने का निर्णय लिया।

यह जानकारी होते ही अनेक मुस्लिम और ईसाई नेता तरह–तरह के प्रलोभनों के साथ उनके पास पहुंचने लगे लेकिन उन्हें लगा कि इन लोगों के पास जाने का मतलब देशद्रोह है। अतः उन्होंने विजयदशमी (14 अक्टूबर 1956) को नागपुर में अपनी पत्नी तथा हजारों अनुयायियों के साथ भारत में जन्मे बौद्धमत को स्वीकार कर लिया। एक प्रकार से डॉ. अंबेडकर एक महान भारतीय विधिवेत्ता, बहुजन राजनैतिक नेता, बौद्ध पुनरूत्थानवादी होने के साथ–साथ भारतीय संविधन के प्रमुख वास्तुकार भी थे। उन्हें बाबा साहेब के लोकप्रिय नाम से भी जाना जाता है। बाबाजी का पूरा जीवन हिंदू धर्म की चतुवर्ण प्रणाली और भारतीय समाज में सर्वव्याप्त जाति व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष में बीता। बाबासाहेब को उनके महान कार्यों के लिए भारतरत्न से भी सम्मानित किया गया। समाज में सामाजिक समरसता के लिए पूरा जीवन लगाने वाले बाबासाहेब का छह दिसम्बर 1956 को देहावसान हो गया। डॉ. अम्बेडकर को अनेकानेक विभूतियों से नवाजा गया। डॉ. अम्बेडकर आधुनिक भारत के निर्माता कहे गये। उन्हें संविधान का निर्माता, शोषित, मजदूर, महिलाओं का मसीहा बताया गया। एक प्रकार से वे महान मानवाधिकारी क्रांतिकारी नेता भी थे। पिछड़ों व वंचित समाज के सबसे प्रतिभाशाली मानव थे। डॉ. अम्बडेकर भारत सशक्तीकरण के प्रतीक बने। आजाद भारत में वे भारत के प्रथम कानून मंत्री तो बने लेकिन उनकी तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू जी से कभी पटरी नहीं बैठ पायी। वह विश्व स्तर के विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, समाजशास्त्री, मानवविज्ञानी, संविधानविद, लेखक, दार्शनिक, इतिहासकार और आंदोलनकारी थे। अमेरिका में कोलम्बिया विवि. के 100 टाप विद्वानों में उनका नाम था।

—करूणा
बीजेएमसी

Vol. 13 **No.** 12
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"When ideas fail, words come in very handy."
Goethe

"In the end, everything is a gag."
Charlie Chaplin

"The nice thing about egotists is that they don't talk about other people."
Lucille S. Harper

•••

"Good teaching is one-fourth preparation and three-fourths theater."
Gail Godwin

•••

"The graveyards are full of indispensable men."
Charles de Gaulle

•••

"You can pretend to be serious; you can't pretend to be witty."
Sacha Guitry

•••

Compilation: Sanjay Srivastava

WINNERS v/s LOOSERS Part-77

Winners choose what they say;
Losers say what they choose.

•••

Winners use hard arguments but soft words;
Losers use soft arguments but hard words.

•••

Winners stand firm on values but compromise on petty things;
Losers stand firm on petty things but compromise on values.

•••

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would not want them to do to you";

•••

Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you ."
Winners make it happen;
Losers let it happen.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **hodbjmc@tecnia.in**